मानव-जाति के लिए अमर संदेश

पाँच हजार वर्ष पहले भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस सत्य का उद्घोष किया था, वही सत्य (परमात्मा) कुरान, बाइबिल, ग्रन्थसाहब, अवेस्ता इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों में है जो गीता के बाद के ही हैं। इन सभी महापुरुषों ने एक परमात्मा का ही संदेश दिया। इसीलिए गीता सभी धर्मशास्त्रों काअकेले हीप्रतिनिधित्वकरती है। एक परमात्मा की चर्चा हटा दी जाए तो किसी के पास कुछ नहीं बचेगा। उस परमात्मा की सर्वप्रथम खोज के कारण ही भारत विश्वगुरु है।

सर्वप्रथम भारतीय ऋषियों ने ईश्वर की खोज करके उसेसम्पूर्ण मानव-जाति के सम्पूर्णसुखों का आधार बतलाया। उसके बाद राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर आदि शंकाराचार्य, ईसा, मोहम्मद, सुकरात, अरस्तू इत्यादि ऋषियों ने प्राप्त करकेसम्पूर्णमानव-जातिकोउस पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। आदि से अब तक यदि संसार को कुछ देने लायक है तो इन्हीं महापुरुषों के पास देने की क्षमता है। इनके पदचिन्हों पर चलकर कोई भी व्यक्ति दुखःमुक्त होसकताहै,लोकप्रियहोसकताहै।

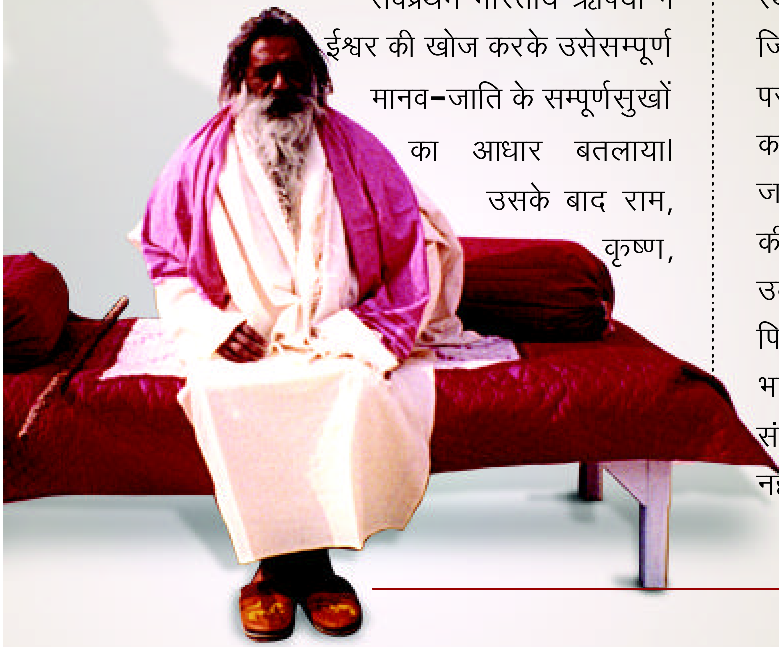

जिस पद, धन एवं सीमाओं की वृद्धि में मनुष्य अनैतिक कदम उठाकर खून-खराबा करता है, अपहरण करता है, क्या यह सब स्थायीहैं? क्या इससे पहलेऐसेव्यक्तिनहींहुए जिन्होंने लाखों मनुष्यों के खून से सींचित भूमि पर शासन करने का प्रयास किया, लेकिन कबतक? क्या आजवे सीमाएँ व खजाने अपनी जगहपरहैं? इतनेबड़े पाप से दबीउनमनुष्यों कीआत्मायें आज भी भटक रहीहैं,असह्यदुःख उठाकर अपनेत्राणकाउपायखोजरहीहैं।वह पिता, पिता नहीं जोअपनी संतान के लिए काँटों भरा रास्ता छोड़ जाता है। जबभीकाँटें चुभते हैं संतान बददुआ देती है। वह प्रतिनिधि,प्रतिनिधि नहीं जो अपने पीछे चलनेवाले समाज को

वैमनस्यताकेमार्गपरचलाकरसदैवकेलिए उसके पतन एवं दुःख का द्वार खोल देताहै। आज जिसके लिए मानव-जाति लड़ रही है, वह सदैव के लिए नहीं मिलेगा। लेकिन यह बोया हुआ बीज अपनी सन्तानों को सदैव दुःख के घेरे मेंरखेगा।भाईको भाई से, पति को पत्नी से, माता-पिता को बेटे से, सम्बन्धी को सम्बन्धी से एवं मित्र को मित्र से अलग करता रहेगा। वर्तमान विचारों एवं कार्य-प्रणाली से कभी भी मानव-जाति सुखी नहीं हो सकती और न ही उसका वास्तविक विकासपनपसकताहै।

यह विकास जो आप देख रहे हैं, इससे करोड़ गुनाविकास मनुष्य और कर ले लेकिन सुख कभी नहीं मिलेगा। वह नदी की भाँति निरन्तर ठोकरें खाता रहेगा, जब तक वहईश्वररूपीसमुद्रमेंनहींमिलजायेगा।

संसार का सर्वश्रेष्ठ पद, वस्त्र, वाहन, आवास एवं साज-सज्जा के बीच जीवन-यापन करनेवाला व्यक्तिभीदुःखसेमुक्त नहीं है। यदि एक व्यक्ति का, एक संगठन का वर्चस्व सम्पूर्ण भूमंडल पर हो जाए, वह भी कितनेसमयकेलिए?इससेपहलेऐसास्वप्न देखने वाले कितने आए और कितने गये, आज उन संगठनों एवं जातियों का नामोनिशान नहीं है। आज भी जो इन पूर्व आततायियों के मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे हैं क्या ये सदैव रहेंगे? क्या इन सबसे इन्हें सुख-शान्ति प्राप्त हो जाएगी? जिसका परिणाम दुःख है, उस मार्ग पर चलनेवाला क्या मानव-जाति का शुभचिंतक कहा जा सकता है?

अतः उन सभी प्रतिनिधियों से हमारी प्रार्थना हैकिअपने पीछेचलनेवालेसमाजके हितोंको ध्यान में रखतेहुएअपनेमूलमेंहुए ऋषियों, संतों, पीरों एवं फकीरों के उपदेशों का सम्मान कर सम्पूर्ण मानव-जाति को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करके अपना नाम ऋषियों की भाँति सितारों में एवं स्वर्णिम अक्षरों में लिखाकर राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, तुलसी, मीरा, रैदास,गुरुगोरखनाथ कीतरहसदैवके लिए पूजनीय बनें।